पुरातात्त्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट

(1990-91)

विकासखण्ड : महरौनी, जनपद : ललितपुर

क्षेत्रीय पुरातत्त्व इकाई, झांसी
उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ

देवरान कला

महरौनी-मड़ावरा मार्ग पर स्थित ग्राम सैदपुर से उत्तर दिशा में कच्चे नहर मार्ग पर लगभग 12कि०मी० तथा महरौनी से 26 कि०मी० की दूरी पर यह गाँव स्थित है। गाँव के दक्षिण दिशा में लगभग आधा कि०मी० की दूरी पर **दुर्गा** जी नामक स्थान पर आधुनिक **मठिया** निर्मित है। पूर्वाभिमुख मठिया में **महिषमर्दिनी दुर्गा** (माप 0.60 मी० x 0.35 मी०) की खण्डित प्रतिमा स्थापित है। देवी (ल० 12वीं श०ई०) अपने दाहिने हाथ के त्रिशूल से **महिष** पर प्रहार करते हुये निरूपित हैं तथा उनकी अन्य भुजाएं भग्न हैं। **देवी** सिर पर उन्नत शिरोभूषा, गले में कण्ठहार, केयूर, कंकण आदि से विभूषित हैं। इसी प्रतिमा के पास एक **शिवलिंग** प्रतिष्ठित है जिसके सम्मुख **नन्दी** विराजमान है।

नावई

महरौनी-जगारा मार्ग पर स्थित मैनवार ग्राम से उत्तर दिशा में लगभग 6 कि०मी० तथा महरौनी से लगभग 24 कि०मी० की दूरी पर यह गाँव स्थित है। इस गाँव के पश्चिम दिशा में स्थित जैन **अतिशय क्षेत्र नवागढ़** में एक आधुनिक **जैन मन्दिर** निर्मित है। इस मन्दिर के गर्भगृह में लगभग 13वीं शताब्दी ई० की जैन **तीर्थंकर अरनाथ** की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई है। इस प्रतिमा के पार्श्व में **ध्यानी पार्श्वनाथ** (ल० 15वीं श०ई०) की प्रतिमा भी स्थापित है। इन दो प्रतिमाओं के अतिरिक्त **शान्तिनाथ** और **कुंथनाथ** की दो कायोत्सर्ग आधुनिक मूर्तियाँ भी यहाँ प्रतिष्ठापित हैं।

अतिशय क्षेत्र के अन्तर्गत बने हुये एक स्थानीय **संग्रहालय** में कायोत्सर्ग मुद्रा में रूपांकित जैन **तीर्थंकर प्रतिमा** के परिकर का ऊपरी भाग रखा हुआ है। इस परिकर (माप 1.00 मी० x 1.00 मी०) में प्रभामण्डल के दोनों पार्श्वों में रूपायित दो **गज** तथा उनके बीच में रथिका विम्ब में निरूपित **ध्यानी तीर्थंकर** और उनके दोनों ओर खड्गासन मुद्रा में रूपांकित **जिन** मध्यकालीन कला के उत्तम उदाहरण हैं।

यहाँ एक विशाल खड्गासन जैन **तीर्थंकर प्रतिमा** (माप 2.20 मी० x 0.80 मी०) के कंधों पर लटकती केश राशि को देखकर यह प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा **ऋषभनाथ** की है। इसके पादपीठ पर दर्शाये गए दो **चामरधारी परिचर** तथा ऊपरी भाग में उड्डीयमान **मालाधर** अत्यन्त कलापूर्ण दृष्टिगत होते हैं।

जैन तीर्थंकर की **ध्यानी प्रतिमा** (माप 1.10 मी० x 0.90 मी०) के पीछे प्रदर्शित सर्प के आभोग से तीर्थंकर का समीकरण सहजैव **पार्श्वनाथ** से किया जा सकता है। यह प्रतिमा लगभग 12वीं श०ई० में निर्मित प्रतीत होती है (चि०सं० 16)।

ध्यानी पार्श्वनाथ (ल० 12वीं श०ई०) की प्रतिमा (माप 1.65 मी० x 0.95 मी०) उल्लेखनीय है। इसके पृष्ठभाग में दर्शाया गया सर्प तथा शीर्ष के ऊंपर प्रदर्शित सर्पफणों का छत्र भग्न हो चुका है।

तीर्थंकर महावीर की ध्यानी प्रतिमा (माप 0.40 मी० x 0.40 मी०) भी यहाँ विराजमान हैं जिसका शीर्ष तथा हाथ खण्डित हैं। प्रतिमा के पीठिका पर सम्वत् 1196 का **देवनागरी लेख** अंकित है।

एक ही शैली में निर्मित लगभग 12वीं शताब्दी की तीन **तीर्थंकर प्रतिमाओं** के घुटने से नीचे का भाग भग्न है, परन्तु इन मूर्तियों के स्कन्धों पर लटकती हुई केशराशि से यह आभासित होता है कि यह तीनों प्रतिमाएं जैन **तीर्थंकर ऋषभनाथ** की हैं। इनमें से सबसे बड़ी प्रतिमा की माप 1.65 मी० x 0.90 मी० है।

इसके अतिरिक्त यहाँ पर कई तीर्थंकरों के खड्गासन और ध्यानी प्रतिमाओं के भग्न भागों के अतिरिक्त स्तम्भ, आमलक, बिजौरा, चन्द्रशाला, उदुम्बंर, वितान तथा उसके मध्य में उत्कीर्ण कमल की आकृति आदि इस तथ्य के साक्ष्य हैं कि यहाँ लगभग 12वीं श०ई० में एकाधिक **जैन मन्दिर** रहे होगें। इन मन्दिरों से सम्बन्धित वास्तुखण्ड एवं मूर्तियाँ आदि स्थल के छोटे स्थानीय संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

गाँव के मध्य में **देवी जी** नामक स्थान पर बनी **मठिया** तथा नीम के पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर **मध्यकालीन जैन मन्दिर** की प्रतिमाओं के भग्न भाग, चन्द्रशाला परिकर एवं स्तम्भ आदि के भाग रखे हुये हैं। इस मूर्ति संकलन में **गणपति** की प्रतिमा भी प्रतिष्ठापित है जिसमें **गणेश** अपने एक हाथ में मोदक पात्र धारण किये हुये हैं तथा उनकी अन्य भुजायें भग्न हैं।

निवारी

महरौनी-टीकमगढ़ मार्ग पर स्थित यह ग्राम महरौनी से 5 कि०मी० की दूरी पर स्थित है। इस ग्राम के मध्य में निर्मित आधुनिक मन्दिर के प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्वो में बने हुये आलों में एक-एक स्थानक देवी प्रतिमाएँ स्थापित हैं। मन्दिर के बायें पार्श्व के आले में गोद में शिशु धारण किये हुये त्रिभंगी **देवी** (माप 0.50 मी० x 0.25 मी०) एकावली; हार, एवं अधोवस्त्र से सज्जित प्रदर्शित की गयी हैं। बायें अंक में शिशु धारी इस देवी (ल० 12वीं श०ई०) की पहिचान **मातृ देवी** से की जा सकती है।

इसी प्रकार प्रवेश द्वार के दाहिने पार्श्व में त्रिभंगी **दर्पणहस्ता नारी** (माप 0.55 मी० x 0.30 मी०) का **रूपांकन अत्यन्त आकर्षक** और कलात्मक है। वह गले में हार, एकावली, कानों में कुण्डल, आकर्षक सिरोभूषा तथा अधोवस्त्र से सज्जित अपना रूप दर्पण में निहारती हुई रूपांकित हैं। कला की दृष्टि से यह नारी रमणी रूप में दृष्टिगत होती है।

मन्दिर के भीतर **शेषशय्या** पर लेटे हुये **विष्णु** (माप 0.35 मी० x 0.20 मी०) का रूपांकन अवलोकनीय है, वह एक दाहिने हाथ से सिर को सहारा दिये हुये तथा दूसरे दाहिने हाथ में गदा धारण किये हुये निरूपित किये गये हैं। अपने दोनों बायें हाथों में वे क्रमशः चक्र तथा शंख लिये हुये दर्शाये गये हैं। विष्णु के नाभिकमल पर **ब्रह्मा** को भी रूपायित किया गया है। सर्पफणों के **छत्र** से आच्छादित शीर्ष वाले विष्णु के पैरों को सम्वाहित करती हुयी **लक्ष्मी** का रूपांकन द्रष्टव्य है। उक्त प्रतिमा लगभग 12वीं श०ई० में निर्मित प्रतीत होती है।

'परिकर में अंकित शंख पुरुष की आकृति को देखने से यह आभासित होता है कि यह परिकर **विष्णु प्रतिमा** से सम्बद्ध रहा होगा।

कण्ठहार, बाजूबन्ध, कंकण, सर्प यज्ञोपवीत और उदर बन्ध आदि वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं। गणेश तीन हाथों में परशु, दण्ड, सर्प धारण किए हुये हैं, एवं कटिहस्त चौथा हाथ नृत्य मुद्रा में रूपांकित है।

इसी प्रतिमा संकलन में लगभग 10वीं श०ई० की **हनुमान** प्रतिमा (माप 0.40 मी० x 0.25 मी०) का शीर्ष अत्यन्त कलात्मक है।

वैदपुर

तहसील मुख्यालय महरौनी से पश्चिम कच्चे मार्ग पर लगभग 2 कि०मी० की दूरी पर यह गाँव स्थित है। इस गाँव के अन्तर्गत स्थित लगभग एक मीटर ऊँचे टीले की सतह से लाल रंग के मृद्भाण्डों में सकोरे, घट, हाँडी, संचय घट आदि के टुकड़े मुख्य रूप से प्राप्त होते हैं।

टीले पर बने एक चबूतरे के ऊपर मध्यकालीन मन्दिर का **सिर दल** (माप 1.15 मी० x 0.40 मी०) प्रतिष्ठित है। सिरदल के ललाट विम्ब पर चतुर्भुजी **गरुड़ारुढ़ विष्णु** तथा उनके दोनों पार्श्वों में बायीं और दाहिनी ओर चतुर्भुज **ब्रह्मा** एवं चतुर्भज **शिव** को रूपांकित किया गया है।

पार्श्व में बड़े आकार के प्रस्तर फलक पर ल० 11वीं श०ई० की **रथारुढ़ द्विभुज** सूर्य प्रतिमा (माप 1.80 मी० x 0.20 मी०) के दोनों पार्श्वों में उड्डीयमान मालाधरों को निरूपित किया गया है। इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ खण्डित प्रतिमाएँ तथा अन्य वास्तुखण्ड भी रखे हुये हैं।

समोगर

महरौनी-ललितपुर मार्ग पर महरौनी से लगभग 8 कि०मी० की दूरी पर यह गाँव स्थित है। ग्राम समोगर से पश्चिम दिशा में पीपल वृक्ष के नीचे जगती के ऊपर **देवी जी** नामक स्थान पर एक चतुर्भुज **गणेश** प्रतिमा प्रतिष्ठित है। **गणेश** अपने हाथों में क्रमशः स्वदन्त, परशु धारण किये हैं तथा उनका बायां ऊर्ध्ववर्ती हाथ भग्न है एवं अधोवर्ती हाथ कट्यावलम्बित रूप में प्रदर्शित है।

स्थल पर **विष्णु** (माप 0.20 मी० x 0.20 मी०) की एक आवक्ष प्रतिमा अवलोकनीय है। किरीट मुकुट, कुण्डल, कण्ठहार तथा यज्ञोपवीत धारण किये हुये **विष्णु** के दाहिने हाथ में गदा तथा बायें हाथ में चक्र दर्शाया गया है। उनकी अन्य दो भुजाएँ भग्न हैं। शैलीगत आधार पर उक्त दोनों प्रतिमाएं ल० 12वीं श० ई० में निर्मित प्रतीत होती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ रखी हुई अन्य प्रतिमाओं में **नवग्रह पट्ट** तथा द्वार शाखाओं के खण्डित भाग के अतिरिक्त एक **हनुमान** प्रतिमा का शीर्ष उल्लेखनीय है।

सड़कोरा

महरौनी-सौजना मार्ग पर स्थित सौजना गाँव से लगभग 4 कि०मी० तथा महरौनी से लगभग 22 कि०मी० की दूरी पर यह गाँव स्थित है। इस गाँव में स्थित एक कच्चे सरोवर के तट पर निर्मित आधुनिक मठिया में

विष्णु की चतुर्भुजी स्थानक प्रतिमा (माप 1.50 मी० x 0.70 मी०) स्थापित है। मध्यकालीन कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं आकर्षक इस प्रतिमा में **विष्णु** किरीट मुकुट, कुण्डल, कण्ठहार, कंकण, केयूर, कटिसूत्र, उदरबन्ध, मेखला, बनमाला आदि से सुसज्जित हैं। विष्णु का अगला दाहिना हाथ वरद मुद्रा में रूपायित किया गया है, शेष तीनों हाथों में वे गदा, चक्र और शंख धारण किये हुये निरूपित किये गये हैं, उनके सिर के पीछे पद्म प्रभामण्डल द्रष्टव्य है। परिकर के ऊर्ध्वभाग में मालाधर दशयि गये हैं तथा पादपीठ पर चक्र पुरुष, शंख पुरुष के अतिरिक्त उपासक-उपासिका का निरूपण द्रष्टव्य है। लगभग 12वीं श०ई० में निर्मित यह प्रतिमा ग्रामीणों द्वारा विविध रंगों के लेपन के कारण किंचिद् विद्रूपित हो गयी है।

पार्श्व में आलिंगन वद्ध **उमा-महेश्वर** की प्रतिमा (माप 1.00 मी० x 0.70 मी०) स्थापित है। ललितासन में बैठे **शिव जटामुकुट**, कण्ठहार, केयूर, कंकण एवं उदरबन्ध आदि से सज्जित हैं। **शिव** का अगला दाहिना हाथ अभयमुद्रा में दर्शाया गया है तथा दूसरा हाथ त्रिशूलयुक्त है बायें हाथों में से एक हाथ सर्पयुक्त तथा दूसरा **उमा** का आलिंगन करते हुये रूपायित है। **उमा** का दाहिना हाथ शिव के स्कन्ध पर तथा बायां हाथ दर्पण युक्त निरूपित है। पादपीठ पर **शिव** एवं **उमा के वाहन नन्दी** तथा **सिंह** भी दशयि गये हैं। लगभग 12वीं श०ई० में निर्मित यह प्रतिमा रंगों के लेपन से विद्रूपित हो गयी है।

तालाब के किनारे बनी आधुनिक मठिया में द्विभुज **हनुमान** की ल० 10वीं श०ई० की प्रतिमा अत्यन्त आकर्षक है। मुकुट, कौस्तुभमणि, कंकण, केयूर, यज्ञोपवीत, अधोवस्त्र एवं कृपाण से सज्जित **हनुमान** का दाहिना हाथ शीर्ष पर तथा ऊठी हुई तर्जनी वाला बायां हाथ वक्ष पर आश्रित है। हनुमान के पैर का निचला भाग भग्न है तथा प्रतिमा के ऊपर सिन्दूर का लेपन भी किया गया है।

साढूमल

महरौनी-मड़ावरा मार्ग पर महरौनी से लगभग 21 कि०मी० की दूरी परं साढूमल गाँव स्थित है। इस गाँव के पूर्व दिशा में स्थित पीपल वृक्ष के नीचे रथिका विम्ब में **नर्तक गणेश** (माप 0.60 मी० x 0.20 मी०) का रूपांकन द्रष्टव्य है। सूर्पकर्ण, एकदन्त, लम्बोदर **गणपति** मुकुट, कण्ठहार, यज्ञोपवीत, भुजबन्ध, कंकण, अधोवस्त्र एवं नूपुर आदि वस्त्राभूषणों से सज्जित हैं। **गणपति** (ल० 12वीं श०ई०) का अधोवर्ती दाहिना हाथ खण्डित एवं ऊर्ध्ववर्ती हाथ परशु युक्त है। बायें हाथों में से ऊर्ध्ववर्ती हाथ स्वदन्त युक्त तथा अधोवर्ती हाथ भग्न है। त्रिभंग **गणेश** के पैरों की थिरकन अत्यन्त कलापूर्ण है।

इस क्षेत्र की लोकप्रिय शैली में निरूपित **हनुमान** (माप 0.55 मी० x 0.25 मी०) को बायें पैर से झुकी **स्त्री आकृति (राक्षसी?)** का दमन करते हुये प्रदर्शित किया गया है। **हनुमान** का शीर्ष भाग भग्न है। पार्श्व में एक **शिवलिंग स्थापित** है जिसके समक्ष नन्दी विराजमान हैं।

गाँव से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर 5 मी० x 5 मी० वर्गाकार क्षेत्र में एक कलात्मक **बावली** स्थित है। गाँव के पूर्वी भाग में दूसरी सोपान युक्त **बावली** निर्मित है। चतुष्कोणीय इस **बावली** के भीतरी दीवारों में बनाई गयी मेहराबें तथा सोपान अत्यन्त आकर्षक हैं।

हैं। अन्य चार देवकुलिकाओं में क्रमशः **ध्यानी अरनाथ, ध्यानी श्रेयांशनाथ, ध्यानी अजितनाथ** तथा **ध्यानी चन्द्रप्रभनाथ** की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं। पाँचवीं देवकुलिका में पीतल निर्मित **पार्श्वनाथ** की तीन प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठापित हैं। **चन्द्रप्रभनाथ** की देवकुलिका को छोड़कर अन्य **देवकुलिकाओं** के ऊपर बुन्देलाशैली का उन्नत **शिखर** शोभायमान है। इनका परस्पर संयोजन भव्य दृष्टिगत होता है।

सौजना

महरौनी-सौजना मार्ग पर महरौनी से लगभग 18 कि०मी० की दूरी पर सौजना ग्राम स्थित है। इसी मार्ग पर सौजना ग्राम के अन्तर्गत लगभग 5 एकड़ क्षेत्रफल में **राजा मर्दन सिंह** की **गढ़ी** के ध्वंसावशेष विद्यमान है। इस **गढ़ी** का परकोटा तथा इसके भीतर बने हुये भवन पूर्णतया ध्वस्त हो चुके हैं, गढ़ी के ध्वस्त पूर्वी दीवार के समीप बना हुआ चबूतरा **देवी जी** के नाम से प्रसिद्ध है। इस चबूतरे पर लगभग 12वीं श०ई० की दो **चामुण्डा** प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित हैं, इनमें से पहली दस भुजी **चामुण्डा** प्रतिमा (माप 0.55 मी० x 0.30 मी०) दाहिने हाथों में त्रिशूल, कृपाण, बाण, डमरू तथा अस्पष्ट आयुध धारण किये हुये तथा बायें हाथों में से एक हाथ चिबुक पर रखे हुये एवं अन्य हाथों में खड्ग, कपाल, नरमुण्ड तथा पाश(?) धारण किये हुये प्रदर्शित हैं। चामुण्डा का उदर भीतर की ओर धंसा हुआ, स्तन लटके हुए, आँखें, जिह्वा तथा दाढ़ बाहर की ओर निकले हुये निरूपित किये गये हैं। **शवारुढ़ा देवी** के पादपीठ पर दो **गण** भी रूपायित हैं। यहाँ पर प्रतिष्ठित दूसरी **चामुण्डा** प्रतिमा (माप 0.40 मी० x 0.30 मी०) का कटि से नीचे का भाग भग्न हो चुका है। पूर्वोक्त **चामुण्डा प्रतिमा** की शैली में रूपायित दूसरी दस भुजी **चामुण्डा** प्रतिमा के सुरक्षित दाहिने चार हाथों में से एक त्रिशूल युक्त तथा दूसरा नीचे की ओर प्रसरित दिखाया गया है, अन्य दो हाथों के आयुध अस्पष्ट हैं तथा एक हाथ भग्न है। वायीं ओर की चार भुजायें भग्न हैं तथा एक सुरक्षित हाथ नीचे की ओर प्रसरित दिखाया गया है (चि्सं० 50 एवं 51)।

एक प्रस्तर फलक में रुपायित **भैरवी** का निरूपण द्रष्टव्य है। देवी का शीर्ष भग्न है तथा वह अपना दाहिना पैर **शवारुढ़ श्वान** के ऊपर रखे हुये है।

रावणानुग्रह प्रतिमा में आलिंगन वद्ध उमा-महेश (माप 0.45 मी० x 0.25 मी०) को ललितासन में बैठे हुये दर्शाया गया है। जटामुकुट, कण्ठहार, केयूर, कंकण और उदरबन्ध से सज्जित शिव का अधोवर्ती दाहिना हाथ खण्डित है तथा ऊर्ध्ववर्ती दाहिने हाथ में वे त्रिशूल धारण किये हुये निरूपित हैं। वायें हाथों में से ऊर्ध्ववर्ती हाथ सर्प युक्त तथा अधोवर्ती हाथ उमा का आलिंगन करते हुये दर्शाया गया है। वामांग में सुशोभित उमा का दाहिना हाथ शिव के स्कन्ध पर और बायां हाथ दर्पण लिये हुये रुपायित है। पादपीठ पर **रावण** को **उमा-महेश** सहित **कैलाशोत्तोलन** में प्रवृत्त दर्शाया गया है।

इस स्थल पर रखी हुई प्रतिमाओं तथा वास्तुखण्डों में से द्वारशाखाओं में निरूपित **प्रतिहारी युगल** तथा **नारी** के अतिरिक्त खण्डित स्तम्भ, आमलक, चन्द्रशाला आदि के भाग यहाँ मध्यकालीन मन्दिर रहे होने के सूचक हैं।

ध्वस्त गढ़ी के उत्तर दिशा में चतुर्दिक चहार दीवारी से आवृत्त ल0 18वीं–19वीं श0ई0 का पूर्वाभिमुख दिगम्बर **जैन मन्दिर** स्थित है। इस मन्दिर के मेहराब युक्त छोटे एवं आकर्षक प्रवेश द्वार के ऊपर निर्मित **गजपृष्ठाकार शिखर** अत्यन्त प्रभावशाली है। मन्दिर के सामान्य वर्गाकार गर्भगृह में **चन्द्रप्रभनाथ** की संगमरमर निर्मित **ध्यानी प्रतिमा** विराजमान है। मुख्य प्रतिमा के नीचे निर्मित दूसरी पीठिका पर **अरनाथ** की संगमरमर प्रतिमा के अतिरिक्त अन्य **तीर्थकरों** की छोटी प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठित हैं। गर्भगृह की दन्तूलिका युक्त मेहराब से सज्जित वेदिका के ऊपर **गजपृष्ठाकार** संरचना द्रष्टव्य है। गर्भगृह की भीतरी दीवार का स्कन्ध विविध फूल-पत्तियों की डिजाइनों से सुशोभित है। गर्भगृह के सम्मुख बरामदा मण्डप के रूप में है तथा दाहिनी ओर भी एक बरामदा निर्मित है। मन्दिर के वर्गाकार गर्भगृह के ऊपर **बुन्देला शैली** का भव्य **शिखर** सुशोभित है (चि0सं0 52)।

मन्दिर के समक्ष चहारदीवारी से आवृत्त प्रांगण में बायीं ओर आवासीय कक्ष निर्मित हैं तथा चहारदीवारी की भीतरी दीवारों में कुछ प्रतिमाएँ चिनी हुई हैं जिनमें से **जैन देवी अम्बिका** तथा **विष्णु** की प्रतिमाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

गढ़ी के निचले भाग में मध्यकालीन लालरंग के मृद्भाण्डों में सकोरे, घट, संचय-घट, हांडी तथा विभिन्न प्रकार के जलपात्रों के टुकड़े मुख्य रूप से मिलते हैं।

भुजाएं भग्न हो गयी हैं तथा शेष बची हुई एक भुजा में वे दर्पण धारण किये हुये दर्शायी गयी हैं। पाद-पीठ पर वाहन **सिंह** के साथ दो चामर धारी उपासिकाओं का भी अंकन किया गया है। **सिलावन** ग्राम से खोजी गयी **पार्वती** की दूसरी स्थानक प्रतिमा उपर्युक्त वस्त्राभूषणों से सुशोभित है। चतुर्भुजी **देवी** का अगला दाहिना हाथ वरद मुद्रा में प्रदर्शित है तथा अन्य तीन हाथों में वे क्रमशः डमरू, त्रिशूल और कमण्डलु धारण किये हुये रूपांकित हैं। **रूप मण्डन** में पार्वती प्रतिमा के विधान का निरूपण करते हुये बतलाया गया है कि सभी आभूषणों से विभूषित **देवी** की चार भुजाएं तथा तीन नेत्र होने चाहिये। देवताओं से पूजित **उमा** के चारों हाथों में अक्षसूत्र, अम्बुज, दर्पण तथा कमण्डलु होना चाहिये[1]। **सिलावन** ग्राम से ढूढ़ी गयी उपर्युक्त **पार्वती प्रतिमाएं** रूपमण्डन में वर्णित-विधान पर आधारित निर्मित की गयी प्रतीत होती हैं।

कुम्हेड़ी ग्राम के अंजनी माता परिसर में प्रतिष्ठित एक **सप्तमातृका पट्ट** कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रस्तर फलक पर त्रिभंग मुद्रा में रूपायित **सप्तमातृकाओं** के दोनों पार्श्वों में **वीरभद्र** एवं **गणेश** का अंकन द्रष्टव्य है। उल्दनाकला ग्राम के ल० 12वीं श०ई० के प्रस्तर निर्मित मन्दिर के सिरदल के ऊर्ध्वभाग में रूपांकित **सप्तमातृकाएं** अत्यन्त कलापूर्ण हैं। इस पट्ट के दोनों पार्श्वों में **वीरभद्र** एवं **गणेश** का निरूपण अवलोकनीय है।

लोकभाषा में **हलालो देवी** के नाम से प्रसिद्ध विशिष्ट प्रतिमा लक्षणों से युक्त एक द्विभुजी **देवी सिलावन** ग्राम से प्रकाश में आयी है। इस ग्राम के **गुरइय्या बाग** क्षेत्र में एक खुले स्थान पर मस्तक के ऊपर **सर्पफणों** के **छत्र** से आवृत्त त्रिभग मुद्रा में रूपांकित **स्थानक देवी** भूमि पर लम्बायमान है। प्रतिमा दो स्थानों से खण्डित होने पर भी परस्पर संयुक्त रूप से प्रतिष्ठित है, बांयी ओर गोद में देवी **शिशु** धारण किये हुये है जो भग्न हो चुका है, **शिशु** का एक हाथ **देवी** के वाम स्कन्ध पर द्रष्टव्य है। पादपीठ पर दक्षिण पार्श्व में रूपायित **गणेश** भग्न हो चुके हैं तथा वाम पार्श्व में उकडू बैठे **कार्तिकेय** अस्पष्ट आयुध एवं शक्ति लिये हुये प्रदर्शित हैं। **देवी** अपने दाहिने हाथ में पुष्प एवं बांये हाथ में कमल धारण किये हुये हैं तथा उनके शीर्ष के ऊपर निरूपित कलात्मक **नवग्रह** पट्ट द्रष्टव्य है। इसी प्रकार **सर्पफणों** के **छत्र** से आच्छादित मस्तक वाली एक देवी प्रतिमा **खिरिया लटकंजू** ग्राम से प्रकाश में आयी है। द्विभुजी देवी का दाहिना हाथ वरद मुद्रा में दर्शाया गया है एवं वांये हाथ में वह कमण्डलु धारण किये हुये निरूपित हैं। **देवी** गले में हार, कर्णकुण्डल, स्तनसूत्र, कंकण एवं अधोवस्त्र धारण किये हुये हैं। क्षतिग्रस्त मुख वाली देवी के पादपीठ पर दाहिनी एवं बांयी ओर **द्विभुज गणेश** एवं **द्विभुज कार्तिकेय** रूपांकित हैं। इस प्रकार की एक प्रतिमा सम्बंधित जनपद के जखौरा विकास-खण्ड के अन्तर्गत **सीरोनकला** ग्राम से प्रकाश में आ चुकी है।

---

1. अथ गौर्याः प्रवक्ष्यामि प्रमाणं मूर्तिनिर्णयम्,
   चतुर्भुजा त्रिनेत्रा या सर्वाभरण भूषणां।
   अक्ष सूत्राम्बुजं दर्पणञ्च, कमण्डलुम्,
   उमानाम्नी भवेन्सूतिर्वन्दिता त्रिदशैरपि।।
   श्रीवास्तव, बलराम, **रूप मण्डन**, 183, 5-1, 5-2, पृ० 58, आगम कला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981।

जैन धर्म से सम्बन्धित वास्तुखण्ड एवं अन्य प्रतिमाएं **नावई, महरौनी, मिदरवाहा** एवं **भैंरा** ग्रामों से मुख्यत: प्रकाश में आयी हैं।

प्रथम जैन तीर्थकर **ऋषभनाथ (आदिनाथ)** की कायोत्सर्ग एवं ध्यानी प्रतिमाएं **नावई** ग्राम से प्रकाश में आयीं हैं। कायोत्सर्ग मुद्रा में गढ़ी मयी **ऋषभनाथ** की इस मूर्ति के मुख पर असीम शान्ति का भाव दृष्टिगत होता है। स्कन्धों पर लटकती केशराशि से स्पष्टत: प्रतिभासित होता है कि यह प्रतिमा जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभनाथ** की है। ऊर्ध्वभाग में रूपायित **दुन्दुभिवादक** एवं **मालाधर** तथा पीठिका पर निरूपित दो **चामरधारी अनुचर** अत्यन्त कलात्मक हैं।

इस संग्रहालय में तीन कायोत्सर्ग **तीर्थंकर** की प्रतिमाएं रखी हुई हैं जिनके कन्धों पर लटकती केशराशि यह आभासित होता है कि ये तीनों प्रतिमाएं जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर **ऋषभनाथ** से सम्बंधित हैं। इन प्रतिमाओं के घुटनों से नीचे का भाग खण्डित हो चुका है।

नावई ग्राम स्थित आधुनिक मन्दिर में जैन धर्म के सोलहवें एवं सत्रहवें तीर्थकर **शान्तिनाथ** और **कुन्थनाथ** की दो कायोत्सर्ग प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। मुख पर असीम शान्ति का भाव धारण किये हुये ये दो आधुनिक प्रतिमाएं अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली हैं।

जैन धर्म के अट्ठारहवे तीर्थंकर **अरनाथ** की एक कायोत्सर्ग प्रतिमा (ल. 12वीं श०ई०) **नावई** के जैन परिसर स्थित **सग्रहालय** में सुरक्षित है। इस प्रतिमा के पादपीठ पर लांछन **मत्स्य** अंकित किया गया है। प्रतिमा के परिकर में **छत्र** के ऊपर **दुन्दुभिवादक, गज** एवं **उड्डीयमान मालाधर** आदि द्रष्टव्य हैं।

मिदरवाहा ग्राम से पीठिका पर अंकित लाछन **शख** से युक्त जैन धर्म के बाइसवें तीर्थंकर **नेमिनाथ** की भग्न **ध्यानी प्रतिमा** के शेष बचे ध्यानमुद्रा में रूपायित पैर का भाग प्रकाश में आया है। पीठिका पर अंकित **देवनागरी लेख** (ल० 13वीं श०ई०) के अग्रभाग में सम्बत् 1271 आषाढ़ दि० 4 सुदी (**नेमिनाथ** ?) पाठ्य है। लेख का शेष भाग अस्पष्ट होने के कारण अपठनीय है।

जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ** की दो ध्यानी प्रतिमाएं **नावई** ग्राम के जैन **अतिशय क्षेत्र** स्थित **संग्रहालय** में उपलब्ध हैं। नग्न रूपायित ध्यानी **पार्श्वनाथ** प्रतिमाओं की पीठिका पर **सर्प** निरूपित है। इन दोनों प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा के पृष्ठ भाग में निरूपित सर्प का आभोग एवं शीर्ष के ऊपर रूपांकित सप्तफणों का छत्र भग्न हो चुका है। इस प्रकार ध्यानमुद्रा में रूपायित **पार्श्वनाथ** की ये दोनों प्रतिमाएं मध्यकालीन **जैन कला** की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

महरौनी के शान्ति निकेतन इण्टर कॉलेज परिसर में स्थित **जैन मन्दिर** में प्रतिष्ठत **ऋषभनाथ** की दो प्रतिमाएं अत्यन्त कलात्मक है। कायोत्सर्ग मुद्रा में गढ़ी गयी ये निर्वस्त्र मूर्तियाँ मध्यकालीन **जैन कला** की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।